देव भाभी

राज्य संसाधन केन्द्र, प्रौढ़ शिक्षा, इंदौर, म.प्र.

देव भाभी

कोड नं.	:	001 (III)
लेखक	:	सीमा व्यास
चित्रांकन	:	सुमन्त गोले
संस्करण	:	प्रथम, फरवरी 2009
प्रतियाँ	:	500
मूल्य	:	12.00 रुपये

© प्रकाशकाधीन

प्रकाशक : राज्य संसाधन केन्द्र, प्रौढ़ शिक्षा
भारतीय ग्रामीण महिला संघ
महालक्ष्मीनगर, सेक्टर आर, इंदौर-452010, म.प्र.
फोन- 2551917, 2574104 फैक्स- 0731-2551573
e-mail: srcmpindore@gmail.com
literacy@sify.com
Web: www.srcindore.org

मुद्रक : सिद्धार्थ ऑफसेट

आमुख

कहानियों का जीवन में बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है। इनमें लोक जीवन की सजीव व मनोरंजक झाँकी मिलती है। ये नीति और मर्यादाओं पर आधारित होती हैं। इनमें जीवन का सार छुपा हुआ है। बड़े मनोरंजक ढंग से ये कथाएँ मानव का पथ प्रदर्शन करती हैं।

'देव भाभी' पुस्तिका में महिला सशक्तिकरण पर आधारित कहानी दी गई हैं। यह कहानी नवसाक्षरों का मनोरंजन करेंगी, साथ ही उनमें छुपे हुए गूढ़ नैतिक मूल्य उन्हें अपनी जिम्मेदारियों का भी अहसास कराएँगे। इस पुस्तिका में दी गई कहानी की प्रस्तुति केन्द्र की सहायक समन्वयक **श्रीमती सीमा व्यास** द्वारा बड़े ही रोचक ढंग से की गई है। पुस्तिका के लिए आकर्षक चित्रांकन **श्री सुमन्त गोले** द्वारा किया गया है। केन्द्र इनके प्रति आभार व्यक्त करता है।

आशा है कि यह पुस्तिका नवसाक्षरों को अवश्य ही पसंद आएगी। पुस्तिका के संबंध में आपके सुझावों का सदैव ही स्वागत रहेगा।

कुन्दा सुपेकर
निदेशक
राज्य संसाधन केन्द्र,
प्रौढ़ शिक्षा, इंदौर, म.प्र.

देव भाभी

आषाढ़ का मास बीता जा रहा था। अब तक बारिश की एक भी बूंद ने धरती को नहीं छुआ था। आते-जाते सबकी निगाहें आसमान को तकतीं। सुबह शाम सब देव भाभी के ओटले पर इकट्ठा होते। बारिश की कामना करते। देव भाभी बड़े-बुजुर्ग की भांति सबको दिलासा देतीं 'धीरज धरो। इन्दर देवता देर-सवेर

बरसेंगे जरूर।' देव भाभी हमारे घर के ठीक सामने रहती थीं। मैं बचपन से ही देव भाभी का लाड़ला रहा। क्योंकि मैं उनकी पक्की सहेली का कुलदीपक था। मुझे मेरी माँ से ज्यादा अच्छी देव भाभी लगती। कई बार सोचता था कि मैं उनके घर क्यों नहीं पैदा हुआ? सिर्फ मैं ही नहीं गाँव के बच्चे-बूढ़े सभी देव भाभी को पसंद करते थे।

देव भाभी की उम्र पचास से ज्यादा थी। उनके परिवार में उन्हें भाभी कहने वाला कोई नहीं था। पर पूरा गाँव उन्हें देव भाभी ही कहता था। गोरे रंग और ऊँची कद काठी वाली देव भाभी की ओर सबकी आँखें ठहर सी जातीं। उनका पहनावा भी सबसे अलग था। वे चटख रंग की चोली और छींटवाला लुगड़ा पहनती थीं। काम करते समय लुगड़े को धोती की तरह पीछे खोंस लेती। जब वे हाट बाजार जाती तो पूरे सोलह मीटर का घेरदार लहंगा पहनती। बाकी समय उनका भारी-भरकम लहंगा कंदील की तरह दीवार पर कील के सहारे लटका रहता। माथे पर

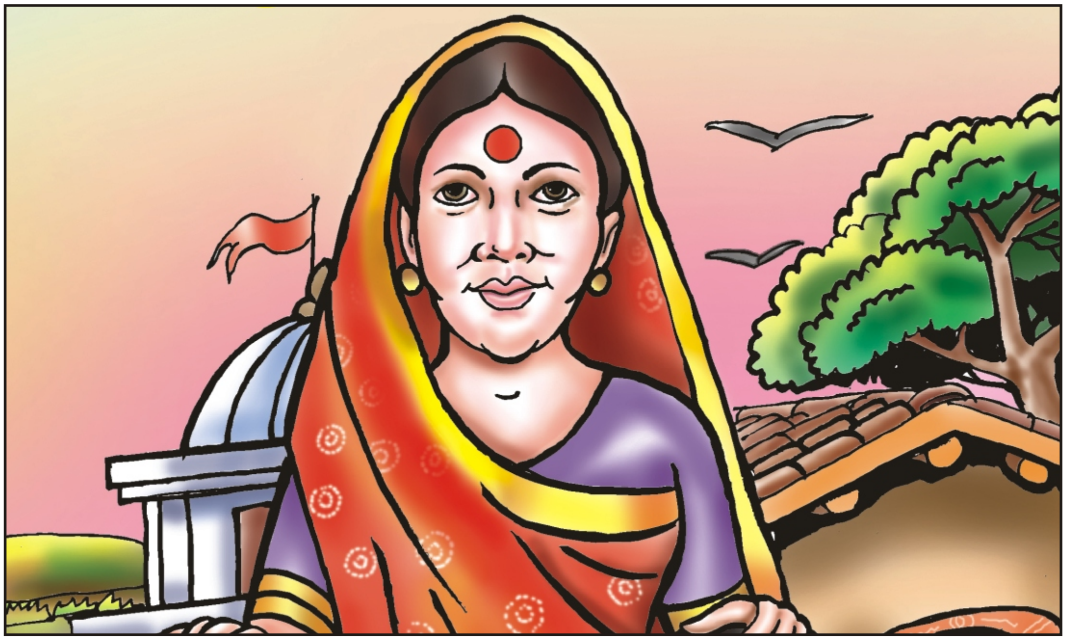

बड़ी सी गोल टिकुली और माथे को छूती लगड़े की कोर उनकी सुन्दरता बढ़ा देते। देव भाभी का चेहरा जितना शांत दिखता था। आवाज उतनी ही दबंग थी। उनकी एक आवाज पर पूरा गाँव इकट्ठा हो जाता था।

कहने को तो देव भाभी ज्यादा पढ़ी-लिखी नहीं थीं। पर घर-बाहर के कामों को वे बड़ी कुशलता से करतीं। ऐसा लगता जिंदगी की किताब को उन्होंने बखूबी पढ़ा और समझा है। गाँव की समस्याओं को हल कराने में देव भाभी सदैव आगे रहतीं।

गाँव के किसी भी परिवार में समस्या आई नहीं कि देव भाभी हाजिर। सारे मसले देव भाभी की कचहरी में ही हल हो जाते। बड़ा होने पर मै उनके घर के सदस्य के समान हो गया था। एक बार मैंने उनसे कहा– 'भाभी, आप गाँव के छोटे–बड़े सब काम करती हो। फिर सरपंच क्यों नहीं बन जातीं?'

देव भाभी बोली– 'बेटा, इस गाँव में पद का नहीं इन्सान मान होता है। पूरा गाँव मुझे सरपंच से अधिक मान देता है। इसी में मेरे धन भाग।' उनके इस उत्तर के आगे मैं कोई प्रश्न न कर सका।

बिसन पटेल की लड़की रानी का रिश्ता देव भाभी ने ही करवाया था। अपने पीहर के गाँव पालदा में। लड़का–लड़की दोनों एक–दूसरे के लायक थे। रानी ने अपने गुणों से ससुराल वालों का मन जीत लिया। रानी की पहली लड़की पीहर में ही हुई। दूसरी बार रानी प्रसव के लिए आई तो सबको लड़के की आस थी। जब दूसरी लड़की हुई तो सबके चेहरे उदास हो गए। रानी के माता–पिता को भी

दूसरी लड़की की खुशी नहीं हुई।

बेटी के जन्म की खबर रानी के ससुराल भी भेजी। पर वहाँ से कोई नहीं आया। धीरे-धीरे महीनें बीत गए। रानी के ससुराल वाले नहीं आए। कई बार खबर भेजी। हर बार वे टाल जाते। एक दिन तो उन्होंने संदेशा भेजा कि रानी को पीहर ही रहने दो। हमें तो लड़का चाहिए हम अपने लड़के की दूसरी शादी कर देंगे।

रानी के माता-पिता तो यह सुनकर रोने लगे। देव भाभी ने हिम्मत दिखाई। अगले दिन पहली बस पकड़कर पालदा गई। सीधे पटेल के घर पहुँची। किस्मत से उनका लड़का घर पर ही था। भाभी ने पूछा- 'क्यों बेटा इस बार क्या बोया था खेत में?'

लड़के ने कहा- 'जीजी, सोयाबीन में पैसा अच्छा मिलता है। इस बार पूरे बीस बीघे में सोयाबीन बोया था।'

देव भाभी बोली- 'तो फिर बहुत अच्छी फसल आई होगी गेहूँ की?'

'गेहूँ की?' पटेल के लड़के ने चौंककर पूछा। इतने में

पटेल आकर बोले– 'अरे, सोयाबीन लगाएंगे तो गेहूँ कहाँ से आएंगे? कैसी बात करती हो?'

देव भाभी बोली– 'खेत में जो लगाएंगे वहीं फलेगा ये तो मैं जानती हूँ। मैं आपको यही बात समझाने आई हूँ। औरत के शरीर में बच्चे का बीज डालने की जिम्मेदारी पिता की होती है। बीज लड़की का डला होगा तो लड़का कहाँ से होगा?'

'यानी? मैं समझा नहीं तुम्हारी बात।' पटेल ने कहा। इतने में घर की औरतें भी आ गईं। देव भाभी ने सबको समझाते हुए

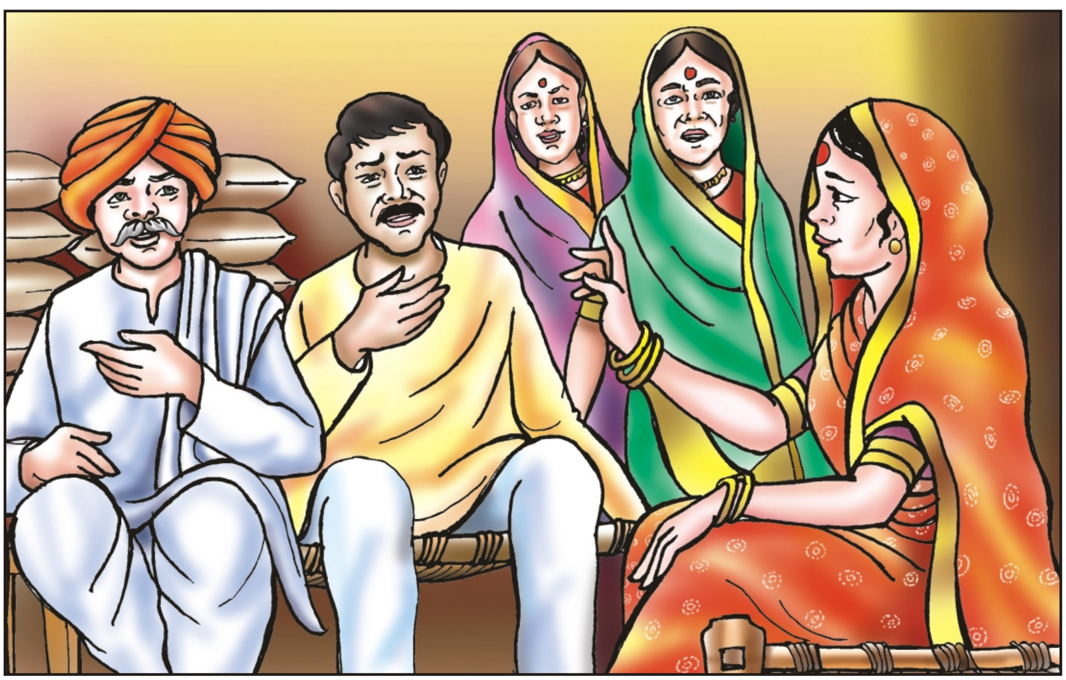

कहा– 'मैं सबको पूरी बात समझाकर ही जाऊंगी। हम गाँव वाले हमेशा लड़की होने का दोष बहू को देते हैं। पर असल में इसका उल्टा है। लड़का होगा या लड़की यह पिता पर निर्भर है। लड़के–लड़की दोनों के बीज सिर्फ पिता में होते हैं। वो जो बीज डालेगा वो फल होगा। कुछ समझे आप लोग।'

लड़का बोला– 'हाँ जीजी, समझा तो। पर क्या ये सच है?'

पटेल की पत्नी बोली– 'और हमें लड़का ही चाहिए तो?'

देव भाभी ने कहा– 'पहली बात तो ये जानकारी सौ फीसदी सही है। लड़का होगा या लड़की ये तो ऊपर वाले की मर्जी पर है। आपके चाहने से कुछ नहीं होता। लड़के की दूसरी शादी भी कर दोगे तो कोई गारंटी नहीं कि उसे लड़का होगा। लड़कियाँ तो ईश्वर का उपहार है। सरकार भी कई योजनाएँ लड़कियों के लिए ही चला रही है। अब देर मत करो। आज ही चलो। रानी और अपनी राजकुमारियों को ले आओ।'

देव भाभी बिसन पटेल के साथ गाँव लौटी। पूरे गाँव में खुशी की लहर दौड़ गई। रानी के तो पैर जमीन पर पड़ ही नहीं

रहे थे। पूरा परिवार खुश था। रानी को ससुराल वाले राजी-खुशी ले गए। पूरे गाँव में देव भाभी का मान और बढ़ गया।

देव भाभी अपने इस मान से संतुष्ट थीं। पर उस बारिश वाले दिन की घटना ने उनका मान कई गुना बढ़ा दिया।

उस दिन बारिश होने के आसार नजर आ रहे थे। काले-काले बादल आसमान पर छा गए थे। खेती-किसानी करने वालों के मन खुशी से भीग गए थे। सांझ होते ही अंधेरा गहरा गया। टपा-टप, टप पानी की बूंदें गिरते ही बच्चों का शोर सुनाई देने लगा। 'पानी बाबा आया, ककड़ी-भुट्टा लाया।'

मिट्टी से सोंधी-सोंधी महक उठी। किसी ने अपने पशुओं को अंदर लिया। कोई पतरे पर तिरपाल ढंकने लगा। दो-तीन घंटे लगातार, झमाझम बारिश हुई। रात गहराने पर भी बारिश उसी तरह होती रही। भरपूर बारिश की कामना करते हुए पूरा गाँव सो गया।

रात के दो-ढाई बजे होंगे। बहुत तेज बारिश हो रही थी। सबके दरवाजों पर ठक्-ठक् ठोंकने की आवाज आई। नींद में

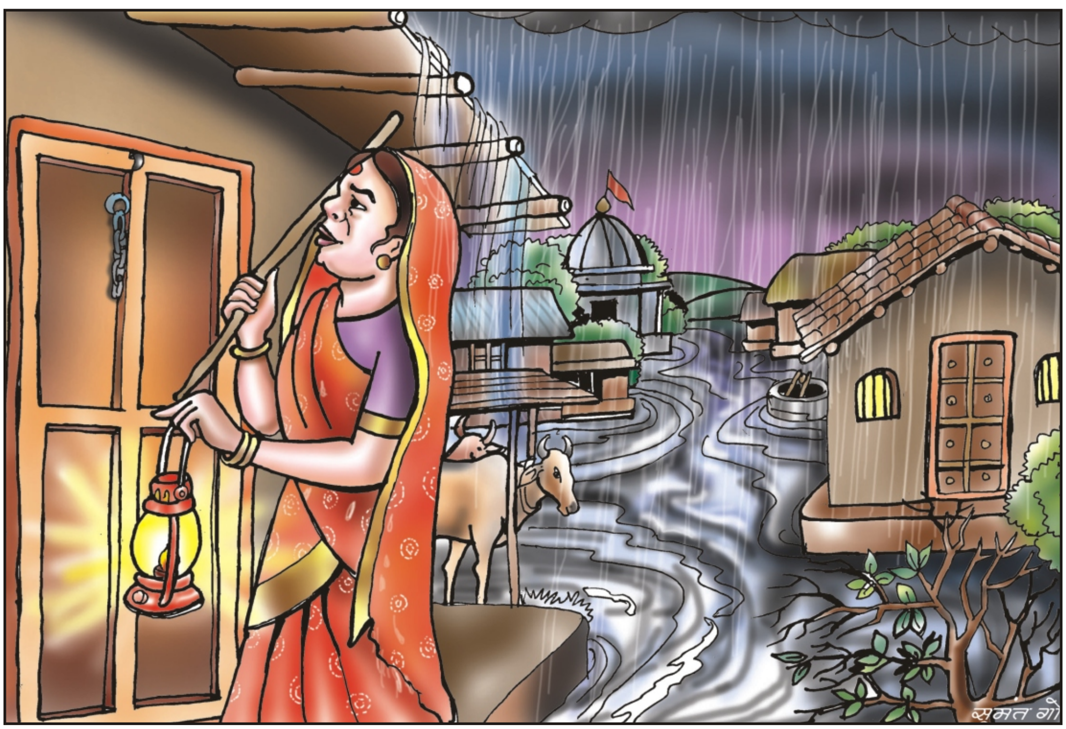

से किसी तरह उठकर लोग बाहर आए। एक हाथ में कंदील और दूसरे में लाठी लिए देव भाभी खड़ी थीं। सबके दरवाजे ठोंकते हुए कह रही थीं– 'उठो, देखो गाँव में पानी भर गया है। नहर ऊपर से बह रहा है। अपने ढोर–डंगर को संभालो। बाल–बच्चों को संभालो। पानी तेजी से बढ़ रहा है। उठो, जागो।'

पानी में तर–बतर देव भाभी पूरे गाँव को जगाने में जुटी थीं। बारिश के शोर को चीरती उनकी आवाज घरों के भीतर तक जा रही थी। थोड़ी सी देर में ही गाँव वाले जाग गए। तेजी से बढ़ता पानी देख सब घबराने लगे। देव भाभी ने कहा– 'यूं घबराने से काम नहीं बनेगा। जिनके बाड़े में पानी भर गया है वे ढोर–डंगर को मेरे बाड़े में ले आओ। सामान जाए तो बह जाने दो। पर अपने पशुधन के बचा लो।'

देव भाभी के दिमाग को दाद दे रहा था। वे बार–बार पशुधन बचाने का कह रही थी। वे जानती थी बारिश थमते ही बोवनी होगी। बोवनी के समय बैल नहीं रहेंगे तो किसानों की कमर ही टूट जाएगी। सबको अपने सामान,

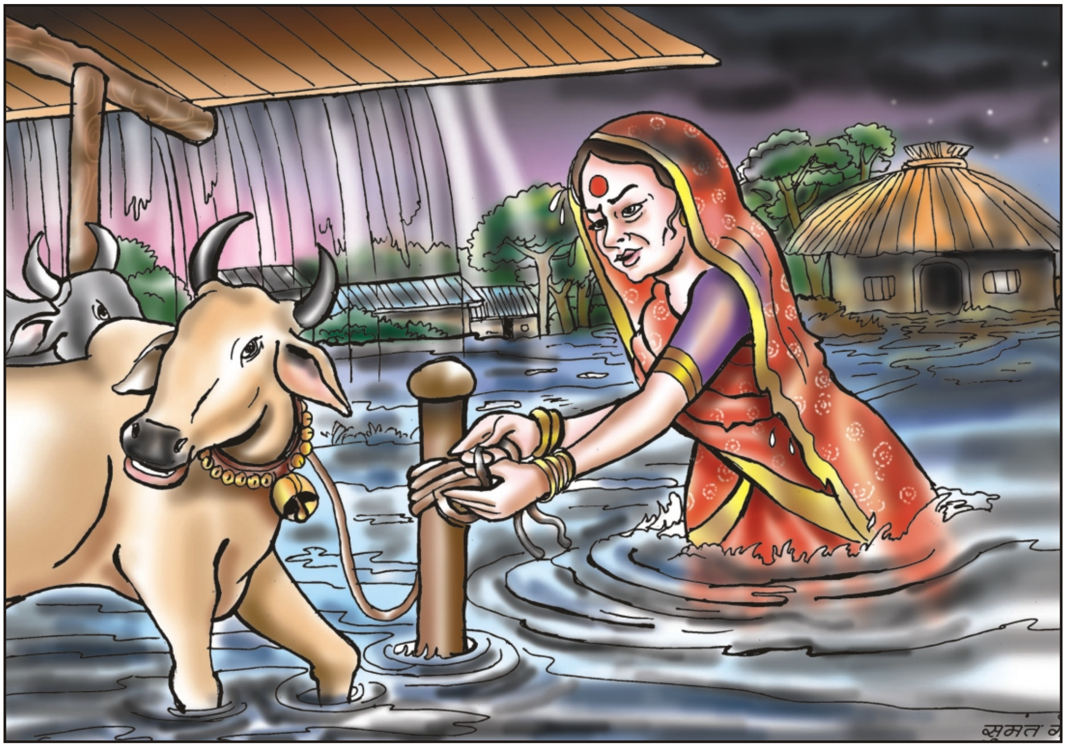

अपने पशुओं की फिक्र हो रही थी। पर देव भाभी को दूसरों की फिक्र थी, अपनी नहीं।

अचानक देव भाभी को कुछ याद आया और वे मदन काका के घर की ओर गई। काका मातम पुरसी के लिए बाहर गए थे। घर में उनकी पत्नी, तीन बच्चे और दो गाएं थीं। मदन काका की पत्नी बच्चों को गोदी में उठाए रो रही थी। देव भाभी ने मदन काका की पत्नी और बच्चों को अपने घर

पहुँचाया। घुटने तक पानी में जाकर गाएं खोली और उन्हें खींचते हुए अपने बाड़े में ले गईं।

कई घरों में पानी भर गया था। कच्ची नींद से जागे बच्चे रोए जा रहे थे। देव भाभी ने रातों-रात मंदिर का ताला खुलवाया। औरतों को ओटले पर बैठाया। देव भाभी ने मंदिर में बच्चों को सुला दिया। मानो अब इनकी रक्षा गोवर्धनधारी ही करेंगे।

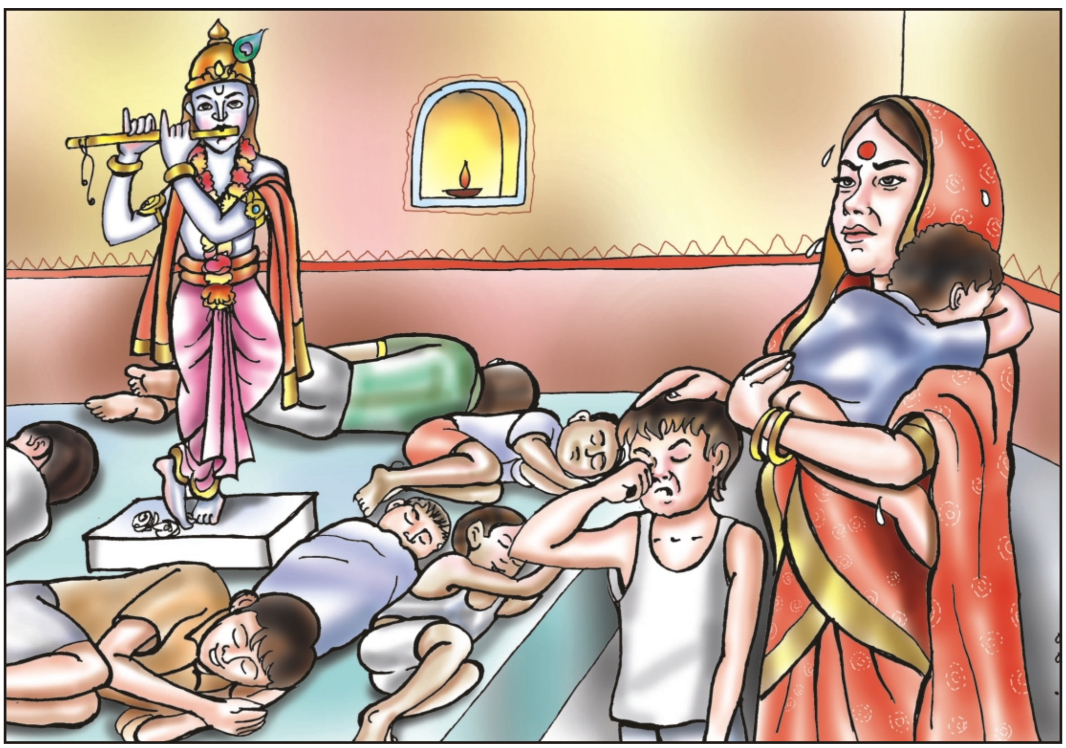

देव भाभी को सब लोगों में नहर से लगी बस्ती का कोई नजर नहीं आया। वे समझ गईं कि उधर के लोग छूआछूत के डर से इधर नहीं आ रहे हैं। वे फौरन 4–5 लड़कों को लेकर बस्ती की ओर गईं। वहाँ भी पानी के कारण हाहाकार मचा हुआ था। औरतें–बच्चे सब रो रहे थे। देव भाभी ने औरतों को ढाढस बंधाया। बोली– 'इन्दर देवता तो सब के लिए बरसा रहे हैं। वे भेद नहीं करते तो हम भेद करने वाले कौन? इस समय सोच–विचार मत करो। बच्चों को ले जाकर ने मंदिर में सुला दो। औरतों को भी वहीं ओटले पर बैठा दो। आदमी लोग जो सामान उठा सकते है वो उठा लें। सामान के पीछे जान मत दो। सर सलामत तो पगड़ी हजार।'

सब औरतें देव भाभी के पीछे–पीछे मंदिर की ओर गईं। देव भाभी के कारण आज जाति–पाति की दीवार भी पानी के साथ बह गई थी। बच्चे–बूढ़े, ढोर–डंगर सबको ठौर ठिकाना मिलने तक देव भाभी को चैन नहीं आया। बरसते पानी में

रात भर वे सबकी खोज-खबर लेती रहीं।

रात ने करवट ली। अंधेरा छंटने लगा। सुबह हो रही थी। बारिश की बूंदें कुछ थमीं। गाँव का पानी तेजी से उतर रहा था। सुबह होने तक सब अपने पशुओं को घर ले जा चुके थे। बच्चों की नींद पूरी हो गई थी। सूखे कपड़ों में देव भाभी बड़ी तसल्ली से सुड़क-सुड़क कर चाय पी रही थी। उनको घेरे हुए लोग बारिश के कहर की चर्चा कर रहे

थे। मंगू बा ने रेडियो चलाया। उसमें भी कई जगह कम-ज्यादा बारिश होने की खबरें थीं। अखबार में भी बारिश के ही समाचार थे। कहीं जान का नुकसान हुआ था तो कहीं माल का। कहीं छोटे-बड़े नेताओं की मदद की अपील के फोटो थे। किसी ने धर्मशाला खुलवाकर वाहवाही अपने नाम कर ली थी। इन सबमें 'देवी' जैसी देव भाभी के साहस का जिक्र कहीं नहीं था। होता भी क्यों? अखबार तो आज पढ़ा कल रद्दी में। देव भाभी की फोटो तो हर गाँव वाले के मन पर छप गई थी। कभी न मिटने के लिए।

❑

हमारे प्रकाशन

कर का डर	12.00
विनम्रता	9.00
जीवन का मोल	10.00
कायाकल्प	11.00
अकेली	10.00
मजबूरी	10.00
पूतों वाली	9.50
तीसरा बेटा	8.00
घड़ाभर अकल	9.50
महात्मा गांधी भाग-1	8.00
महात्मा गांधी भाग-2	8.00
सूझबूझ	8.00
कठौती में गंगा	8.00
सच्ची प्रार्थना	8.00
हीरों का हार	8.00
अकल की दुकान	8.00
बूझो तो जाने	8.00
सहोदरा	9.00
सच्ची तीर्थ यात्रा	10.00
चिंगारी	8.00
दो कुओं की कहानी	9.00
कहावतों की कहानियाँ	8.00
किस्से अकबर बीरबल के	10.00
सुख-दुख साथ-साथ	16.00
वाणी से पहचान	16.00
संत कबीरदास व संत सिंगाजी	9.00
संत रविदास	8.00
मीराबाई	8.00
गोस्वामी तुलसीदास	8.00
नया जन्म	8.00
सच्चा न्याय	8.00
सूरदास	9.00
गुरु नानकदेव	10.00
लाले का उस्ताद	8.00
झूठ की सजा	8.00
गौतम बुद्ध	9.00
महावीर स्वामी	9.00
ईसा मसीह	9.00
वाणी का कमाल	8.00
मंगू का सपना	8.00
मानव धर्म	9.00
सुनो कहानी	8.50
सुनहरा नेवला	7.00
गाँव की लड़की	9.00
एहसास	10.00
जैसी करनी वैसी भरनी	9.00
बीरबल की चतुराई	8.00
कमजोरी का स्वयंवर	9.00
मेरी उड़ान	15.00
ठकुराइन	12.00
संतों की वाणी	15.00
किस्सा चोटी का	12.00

प्रकाशक : राज्य संसाधन केन्द्र, प्रौढ़ शिक्षा भारतीय ग्रामीण महिला संघ, इन्दौर, म.प्र.

महालक्ष्मीनगर, सेक्टर आर, इन्दौर- 452010 (म.प्र.)

फोन- 2551917, 2574104 फैक्स- 0731-2551573